राज्य को चाहिए स्थिर और मजबूत सरकार

रिलायंस से राजनीति में आए कारपोरेट लीडर परिमल नथवाणी झारखंड में राजनीतिक प्लेटफार्म की तलाश में हैं। हालांकि, किसी भी राजनीतिक दल से जुड़ने की बात को वे अभी खारिज करते हैं, पर विधानसभा के स्थापना दिवस समारोह में उनका भाग लेना, अपने भाषण में शिबू सोरेन की तारीफ, झारखंड को विश्व में पहचान दिलाने का संकल्प, झाविमो प्रमुख बाबूलाल के साथ होर्डिंग में उनकी तस्वीर कुछ और ही इशारा करती है। नथवाणी ने राज्य की राजनीति और विकास पर दैनिक भास्कर के साथ लंबी बातचीत की। विशेष संवाददाता **पंकज त्रिपाठी** के साथ उन्होंने अपने अनुभव बांटे। कहा झारखंड ने उन्हें बहुत कुछ दिया, अब वे इस प्रांत को कुछ देना चाहते हैं।

झारखंड में अभी भी आप राजनेता कम कारपोरेट लीडर अधिक माने जाते हैं?

-मुझे ऐसा नहीं लगता। राजनीति में आने के बाद मैंने बहुत कुछ सीखा और संसद में लगातार यहां की समस्याओं को उठा रहा हूं। रांची भी लगातार आता रहता हूं। स्थायी कार्यालय यहां खुला हुआ है। कोई भी व्यक्ति मुझ तक अपनी बात पहुंचा सकता है। अतिक्रमण के मामले में मैं सड़क पर भी उतरा। कानूनी लड़ाई लड़ी। रांची में नगर निगम अस्पताल बनवाया। कांके में एक गांव में सौर ऊर्जा से बिजली पहुंचाई। यह सब यहां के लोगों के लिए ही है।

झारखंड का भविष्य कैसा देखते हैं?

-झारखंड में पावर हब बनने के साथ इंडस्ट्रियल ग्रोथ की जबरदस्त संभावना है। दुनिया के तमाम बड़े निवेशकों की नजर झारखंड पर है। देश के कई उद्योग व पावर प्लांट यहां से मिलने वाले खनिज व कोयले से चल रहे हैं। जरूरत है निवेशकों को भरोसे में लेने की। स्थिर व मजबूत सरकार

आज का इंटरव्यू

परिमल नथवाणी, सांसद

की। भू अधिग्रहण, जल, उद्योग व स्पष्ट पुनर्वास नीति की।

अभी तक का ट्रेंड क्या कहता है?

-राज्य बने 11 वर्ष हो गए। राज्य अब युवावस्था में प्रवेश कर चुका है। अर्थात माइनर से मेजर बन गया है। यही वक्त है कुछ कर दिखाने का। दुर्भाग्य से राज्य वहां नहीं पहुंच पाया, जहां यह हो सकता था। नीतियां बनें। जनता अच्छे लोगों को चुने। मजबूत सरकार बने। राज्य देश के विकसित राज्यों में शुमार हो जाएगा।

पिछड़ेपन के क्या कारण देखते हैं, कौन है जिम्मेदार?

-राजनीतिक अस्थिरता। मेजोरिटी वाली सरकार नहीं बनी। जल्दी-जल्दी सरकारें बदलती रहीं। ब्यूरोक्रेसी निर्णय लेने से परहेज करती रही। नीतियां नहीं बनीं। इससे बहुत नुकसान हुआ। नीतियों के अभाव में अराजकता बनी। इसके लिए एक दल या एक कारण नहीं, सभी लोग और सभी सरकारें जिम्मेवार हैं।

भ्रष्टाचार और नक्सलवाद कितना जिम्मेवार है?

-ये समस्याएं केवल झारखंड में ही नहीं हैं। गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, बिहार कोई इससे अछूता नहीं। फिर भी वे निरंतर विकास की ओर बढ़ रहे हैं।

राज्य के विकास व भ्रष्टाचार रोकने के लिए आपने क्या किया?

-यह यहां की जनता को तय करना है। मेरी न तो कोई पार्टी है न मैं सरकार में हूं। एमपी फंड में मेरे यहां कोई भ्रष्टाचार नहीं, यह तय है। मैं कमीशन नहीं लेता। गड़बड़ी सामने आई तो कड़ी कार्रवाई होती है। यहां के लोगों के लिए मैं खड़ा हूं। मुझमें जो क्षमता है उसके अनुसार आम लोग या सरकार मुझसे जो भी मदद चाहेंगे मैं सदैव तैयार हूं।

तो क्या किसी पार्टी से जुड़कर सक्रिय राजनीति में आएंगे? झाविमो में आपके आने की चर्चा है?

-सांसद बनते ही सक्रिय राजनीति शुरू हो गई है। झारखंड आने का परपस ही यहां के लोगों के साथ जुड़े रहने का है। यहां के लोगों ने बहुत कुछ दिया। जितना हो सके अब इस ऋण को वापस करना है। अभी किसी राजनीतिक दल में जाने की कोई बात नहीं है। हां, अतिक्रमण का मेरा मुद्दा था। बाबूलाल जी समर्थन में थे तो उनके अनशन में गया। फिर खेल का कार्यक्रम हुआ, उन्होंने बुलाया तो मैं उनके पास गया। वे अच्छे और विजन वाले व्यक्ति हैं। पर अर्जुन मुंडा से भी मैं मिलता रहता हूं। वे अच्छा काम कर रहे हैं। इससे ऐसा नहीं कि मैं किसी दल से जुड़ने के लिए उनके पास जा रहा हूं।

DAINIK BHASKAR
Pg. 07 Dt 25/11/2011